नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305
इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

सिर्फ विचारों में नहीं व्यवहार मेंआना चाहिए शहीदों का दर्शन

हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कोलकाता केंद्र में 'भगत सिंह को याद करते हुए' कार्यक्रम का आयोजन

शहीदों का जीवन दर्शन महज चर्चा-परिचर्चा का विषय नहीं है, इसे व्यवहार में उतारने की जरूरत है। जब तक हम समाजवादी समाज की स्थापना नहीं कर लेते, तब तक शहीदों की शहादत की सार्थकता सिद्ध नहीं हो सकती और यह काम आज की युवा पीढी ही कर सकती है- ये सूत्र बातें हुईं 'कोलकाता हिंदी संवाद' में। कार्यक्रम के दौरान अतिथि प्राध्यापक प्रो चंद्रकला पांडेय ने युवाओं का आह्वान किया कि वे दुनिया के सभी विचारकों के दर्शन को पढ़ें व जाने-

समझें तथा किसी भी स्तर पर हो रहे गलत का विरोध करें। कार्यक्रम संयोजक और केंद्र के कार्यकारी प्रभारी डॉ सुनील कुमार 'सुमन' ने कहा कि भगत सिंह प्रतिरोध की ज़िंदा मिसाल हैं| उनसे सीखते हुए हमें सत्ता के दमनकारी कुचक्र से

कोलकाता हिंदी संवाद

कोलकाता हिंदी संवाद
क्षेत्रीय केंद्र , कोलकाता
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

विचलित न होते हुए खुद को हमेशा मजबूत बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए| आज के संकटपूर्ण राजनीतिक-

सामाजिक माहौल में हमें अपने आस पास के परिवर्तनों से वाकिफ रह कर प्रतिरोध का रास्ता हमेशा तैयार रखना होगा।

भगत सिंह के शहादत दिवस को याद करते हुए आयोजित इस कार्यक्रम की शुरुआत 'द लीजेंड ऑफ़ भगत सिंह' फिल्म केप्रदर्शन से हुई। इसके बाद कुणाल, आलोक और सुशील ने 'रंग दे बसंती चोला' के समूह गान से कार्यक्रम के द्वितीय चरण की शुरुआत की। आलोक ने शहीदों की याद में लिखे अपने दो लेखों का पाठ किया। प्राध्यापिका पूजा शुक्ला ने भाषा सवाल पर भगत सिंह के दृष्टिकोण को उजागर किया| चांदनी साह ने 'ऐसे थे भगत सिंह' लेख प्रस्तुत किया। विनोद साव ने 'विचारों की सान पर क्रांति की तलवार' लेख का वाचन किया। चंदन साह ने

वर्तमान परिदृश्य के मद्देनज़र 'युद्ध अभी जारी है' लेख पढ़ा। वंदना ने 'भगत सिंह के आखिरी लम्हें' को याद किया। संदीप दुबे ने 'भगत सिंह के विचारों की प्रासंगिकता' पर चर्चा की। उमेश शर्मा ने भगत सिंह द्वारा लिखे 'विद्यार्थियों के नाम पत्र' का पाठ किया। मृणाल ने 'अब तो कुछ करना पड़ेगा' गीत प्रस्तुत किया। केंद्र कर्मी सुखेन शिकारी ने बांग्ला देश भक्ति गीत पेश किया। पूजा गौतम ने अछूत समस्या पर भगत सिंह के विचारों को रेखांकित करते हुए एक अंग्रेज़ी कविता का पाठ किया| अशोक जांगिड़ ने क्रांतिकारी कविता और शीला गुप्ता ने भगत सिंह पर लिखी पाश की कविता सुनाई| कार्यक्रम का संचालन करते हुए पीएचडी जनसंचार शोधार्थी तेजी ईशा ने शहीदों के दर्शन को युवाओं के लिए जरूरी बताया। एमए हिंदीके छात्र पंकज साव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी

विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता में आयोजित इस कार्यक्रम में केंद्र के प्राध्यापक, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।